26

भारत की विदेश नीति

प्रत्येक संप्रभु देश की एक विदेश नीति होती है। भारत की भी अपनी एक विदेश नीति है। विदेश नीति के अंतर्गत कुछ सिद्धांत, हित और वे सभी उद्देश्य आते हैं जिन्हें किसी दूसरे राष्ट्र से संपर्क के समय बढ़ावा दिया जाता है। यद्यपि विदेश नीति के कुछ मूल गुण हैं, परंतु फिर भी यह एक स्थायी परिकल्पना नहीं है। अन्तर्राष्ट्रीय हालातों में बदलाव के साथ-साथ विदेश नीति भी बदलती रहती है। भारत की विदेश नीति को ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक और आर्थिक घटकों ने आकार दिया है। हमारे प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने देश की विदेश नीति को एक निश्चित रूप प्रदान किया।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:

- भारत की विदेश नीति के आधारभूत सिद्धांत जान सकेंगे;
- गुट निरपेक्षता का अर्थ और महत्व जान सकेंगे;
- शीत युद्ध काल से पहले गुट निरपेक्षता की प्रासंगिकता जान सकेंगे;
- शीत युद्ध काल के बाद भारत की विदेश नीति की प्रमुख चिन्ताएं जान सकेंगे;
- संयुक्त राष्ट्र द्वारा शांति एवं नि:शस्त्रीकरण की दिशा में किए जा रहे प्रयास में भारत का योगदान जान सकेंगे; तथा
- शांति की दिशा में संयुक्त राष्ट्र द्वारा चलाए जा रहे अभियान में भारत का योगदान और सुरक्षा परिषद में स्थायी सीट की सम्भावना के बारे में जान सकेंगे।

26.1 विदेश नीति के मूल उद्देश्य और सिद्धांत

राष्ट्रीय हितों का ध्यान, विश्वशांति की प्राप्ति, नि:शस्त्रीकरण, अफ्रीकी-एशियाई देशों की स्वतंत्रता आदि भारत की विदेश नीति के मुख्य उद्देश्य रहे हैं। इन उद्देश्यों की पूर्ति कुछ सिद्धांतों के माध्यम से की जाती है जैसे कि पंचशील, गुट निरपेक्षता, औपनिवेशिक विरोध, साम्राज्यवाद विरोध, रंगभेद विरोध की नीतियों सहित संयुक्त राष्ट्र संघ को मजबूत करना। इन सिद्धांतों का विस्तृत वर्णन करना यहाँ पर उपयुक्त होगा।

टिप्पणी

26.1.1 पंचशील

नेहरू विश्व शांति के पक्षधर थे। उन्होंने विकास के लिए शांति और मानवजाति के अस्तित्व के बीच की कड़ी को समझा। वे दो विश्व युद्धों के कारण हुए विनाश को देख चुके थे और जानते थे कि एक देश की प्रगति के लिए दीर्घ शांति काल की आवश्यकता होती है। बिना शांति के विकास संबंधी सामाजिक और आर्थिक प्राथमिकताएं पीछे धकेल दी जाती हैं। परमाणु हथियारों के उत्पादन के कारण नेहरू का शांति के दर्शन पर विश्वास और अधिक बढ़ गया। इसलिए उन्होंने अपने नीति निर्धारण में विश्व शांति को सबसे अधिक महत्व दिया। भारत की सभी देशों के साथ विशेष रूप से बड़े और पड़ोसी देशों के साथ शांतिपूर्ण और मैत्रीपूर्ण संबंधों की इच्छा रही है। 28 अप्रैल 1954 को चीन के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर करते समय भारत ने आपसी संबंधों के लिए पंचशील के सिद्धांतों की पालना की वकालत की।

- एक-दूसरे की क्षेत्रीय अखण्डता और संप्रभुता का सम्मान करना।
- परस्पर अनाक्रमण
- एक-दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना।
- समानता और पारस्परिक हित।
- शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व।

पंचशील समझौता पड़ोसी राष्ट्रों के साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धांतों का सबसे अच्छा निरूपण है। यह भारत की विदेश नीति का महत्वपूर्ण घटक है।

26.1.2 गुट निरपेक्षता

गुटनिरपेक्षता को भारत की विदेश नीति की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के परिमाणस्वरूप गुटनिरपेक्षता का उद्देश्य अमेरिका और सोवियत संघ द्वारा बनाए गए किसी भी सैन्य गुट में शामिल न होकर विदेशी मामलों में राष्ट्रीय स्वतंत्रता को कायम रखना था। गुट निरपेक्षता न तो उदासीनता थी न ही तटस्थ होना और न ही स्वयं को पृथक रखना था। यह एक शक्तिशाली परिकल्पना थी जिसमें किसी भी सैन्य गुट से कोई वचनबद्धता नहीं थी अपितु यह प्रत्येक अंतर्राष्ट्रीय मुद्दे पर उसके गुण दोष के आधार पर स्वतंत्र राय रखना था। गुटनिरपेक्षता की नीति को विकासशील देशों ने समर्थन दिया क्योंकि इससे इन देशों को अपनी संप्रभुता की रक्षा करने का अवसर मिला और शीत युद्ध के दौरान अपनी गतिविधियों को संचालित करने की स्वतंत्रता थी। गुटनिरपेक्ष आंदोलन को मजबूत बनाने में भारत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इस परिकल्पना का विकास धीरे-धीरे हुआ। 1947 में नई दिल्ली में ऐशियाई संबंधों के सम्मेलन को बुलाकर नेहरू ने इसकी पहल की। इसके बाद 1955 में एशिया और अफ्रीका के 29 देशों का सम्मेलन बांडुंग (इंडानेशिया) में हुआ। यह अपने प्रकार का पहला सम्मेलन था जिसने शांति, उपनिवेशवाद से मुक्ति, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक सहयोग की दिशा में साथ-साथ कार्य करने की शपथ ली। 1961 में बेलग्रेड में पहला गुट निरपेक्ष सम्मेलन हुआ जिसने शीत युद्ध की गुटीय राजनीति का विकल्प प्रस्तुत किया तथा नव स्वतंत्र देशों को अपने स्वतंत्र और संप्रभु अधिकारों के प्रयोग का साहस दिया। यह आन्दोलन शीतयुद्ध के संदर्भ में एक विकल्प था जिससे नव स्वतंत्र देशों को अपनी स्वतंत्रता एवं संप्रभु अधिकारों के प्रयोग करने का अवसर मिला।

अमेरिका और सोवियत संघ के बीच तीव्र प्रतिद्वंद्विता ही शीत युद्ध था जिसमें आमने-सामने युद्ध लड़े बिना वे दोनों अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका के देशों को आकर्षित करने में लगे थे। यह द्वितीय विश्व युद्ध के तुरंत बाद प्रारम्भ हुआ और पैतालीस वर्षो तक चलता रहा। ये दोनों राष्ट्र दो विपरीत ध्रुव बन गए

और पूर्व तथा पश्चिम के नाम से जाने जाते हैं। विश्व की राजनीति इन दोनों ध्रुवों के चारों तरफ घूमती थी। इस प्रकार विश्व द्विध्रुवीय बन गया।

गुट निरपेक्षों में, नेहरू ने युगोस्लाविया के राष्ट्रपति टीटो और मिस्र के नासर से विशेष संबंधों का विकास किया। इन्हीं तीनों को गुट-निरपेक्ष आंदोलन का जनक माना जाता है। गुट निरपेक्ष आंदोलन नव स्वतंत्र राष्ट्रों का वह समूह था जिसने अपने पूर्व उपनिवेशी स्वामियों की तानाशाही को अस्वीकार कर दिया और अंतर्राष्ट्रीय मामलों में अपने विवेक के अनुसार निर्णय लेने का निश्चय किया। गुट निरपेक्ष आंदोलन स्वभाव से साम्राज्यवाद का विरोधी है। गुट निरपेक्षता का मुख्य शिल्पी होने और गुट-निरपेक्ष आंदोलन का अग्रणी सदस्य होने के कारण भारत ने इसके विकास में एक सक्रिय भूमिका निभाई।

गुट निरपेक्ष आंदोलन सभी सदस्य राष्ट्रों को उनके आकार और महत्व के आधार के बिना ही उन्हें विश्व राजनीति और विश्व संबंधी निर्णय लेने के अवसर प्रदान करता है। भारत ने 1983 में नई दिल्ली में सातवें गुट निरपेक्ष आंदोलन की बैठक की मेजबानी की। भारत ने आशा जतायी कि यह आंदोलन विकास, नि:शस्त्रीकरण और फिलिस्तीन के प्रश्न पर काम करेगा।

यह आंदोलन चूंकि शीतयुद्ध और द्विध्रुवीय विश्व का परिणाम था, अत: बहुत-से विद्वान शीतयुद्ध और सोवियत संघ के विघटन के बाद इसकी प्रासंगकिता पर प्रश्न चिह्न लगाते हैं। यद्यपि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इस आंदोलन की महत्वपूर्ण भूमिका है। पहली यह कि सोवियत संघ के विघटन के पश्चात विश्व को एक ध्रुवीय विश्व से खतरा है। यह आंदोलन अमरीका के प्रभुत्व पर अंकुश लगाने का काम कर सकता है। दूसरे विकसित (उत्तर) और विकासशील (दक्षिणी) दुनिया आर्थिक मामलों में बँटी हुई है। यह आंदोलन तीसरे विश्व के देशों को उनके विचार व्यक्त करने का एक सही मंच है। इसके अतिरिक्त यह आंदोलन दक्षिण-दक्षिण के बीच सहयोग का एक सशक्त साधन है। अत: यदि तीसरे विश्व के राष्ट्र विकसित देशों की तुलना में अपनी प्रत्याशा बढ़ाना चाहते हैं तो यह आंदोलन अति आवश्यक है। शीतयुद्ध के अंत के बाद भी भारत इस आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग ले रहा है। अंत में इस आंदोलन के अंतर्गत आने वाले विकासशील देशों को 21वीं सदी की आवश्यकतानुसार संयुक्त राष्ट्र में परिवर्तन के लिए संघर्षशील होना पड़ेगा।

26.1.3 साम्राज्यवाद, रंगभेद तथा उपनिवेशवाद विरोधी

भारत ने सदैव उपनिवेशवाद और रंगभेद का विरोध किया है। जब कभी कोई अन्याय हुआ तो भारत ने अपनी आवाज उठाई है। उदाहरण के लिए 1947 में डच उपनिवेशवाद के विरुद्ध इन्डोनेशिया की राष्ट्रीय ताकतों की लड़ाई, दक्षिण अफ्रीका द्वारा नामीबिया पर अवैध कब्जा तथा दक्षिण अफ्रीका की बदनाम रंगभेद नीति का भारत ने विरोध किया तथा साम्यवादी चीन को संयुक्त राष्ट्र का सदस्य बनवाने का समर्थन किया।

26.1.4 संयुक्त राष्ट्र का सशक्तीकरण

संयुक्त राष्ट्र संघ को भारत ने सदैव ही विश्व राजनीति में शांति और शांतिपूर्ण परिवर्तन का एक साधन माना है। इसके अतिरिक्त भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ से यही आशा जतायी है कि वह वार्ताओं और प्रत्याशाओं द्वारा भेदों को कम करने के लिए देशों को सम्मिलित करने में सक्रिय भूमिका निभाए। भारत ने तृतीय विश्व के देशों के विकास में संयुक्त राष्ट्र की सक्रिय भूमिका की वकालत की है। भारत का विश्वास है कि गुटनिरपेक्ष देशों की संख्या बहुत अधिक होने के कारण वे संयुक्त राष्ट्र में एक सार्थक और रचनात्मक भूमिका निभा सकते हैं जिससे कि महाशक्तियों के ऊपर संसार को अपनी इच्छानुसार आकार देने पर अंकुश लगाया जा सकता है। 1950 के प्रारम्भ में ही भारत ने नि:शस्त्रीकरण को विकास के वृहद् लक्ष्य से जुड़ा हुआ माना था।

टिप्पणी

संयुक्त राष्ट्र ने उपनिवेशवाद को समाप्त करने के माध्यम से विश्व शांति बनाए रखने में, मानवीय और विकासात्मक सहयोग देकर मुख्य भूमिका निभाई है। उपनिवेशवाद को समाप्त करने की प्रक्रिया द्वारा मानवता और उसके विकास में सहायक बनकर और शांति के द्वारा संयुक्त राष्ट्र ने विश्व शांति कायम रखने में अहम भूमिका निभायी है। उपनिवेश के अंत का अर्थ है कि उपनिवेशी शासन से स्वतंत्रा प्राप्ति। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अफ्रीका और एशिया के कई राष्ट्र स्वतंत्र हो गए।

पाठगत प्रश्न 26.1

1. रिक्त स्थान भरिए –

(क) भारत की विदेश नीति के मुख्य शिल्पी ..... हैं।

(ख) अफ्रीकी एशियाई सम्मेलन 1955 में ..... में हुआ।

(ग) प्रथम गुटनिरपेक्ष आंदोलन सम्मेलन ..... में सन ..... में हुआ।

(घ) पंचशील समझौता ..... और ..... के बीच हुआ था।

(ङ) भारत ने गुट निरपेक्ष आंदोलन सम्मेलन की मेजबानी ..... में की थी।

2. सही उत्तर पर (✓) लगाएं:

(क) गुट-निरपेक्षता और उदासीनता एक ही हैं। (सत्य/असत्य)

(ख) भारत ने दक्षिण अफ्रीकी सरकार की रंगभेद नीति का विरोध किया। (सत्य/असत्य)

(ग) नेहरू ने टीटो और नासर के साथ मिलकर गुट निरपेक्ष आंदोलन को प्रारम्भ करने में मुख्य भूमिका निभाई। (सत्य/असत्य)

26.2 शीतयुद्ध काल के बाद भारत की विदेश नीति के प्रमुख मुद्दे

1989 में शीत युद्ध के अंत के बाद अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण बदलाव आए और इस प्रकार विकाशील देशों के लिए नीति संबंधी नई समस्याएं आईं। यह नई स्थिति एक बड़ी अनिश्चितता और जटिलता का परिणाम है।

भारत के लिए सोवियत संघ के विघटन से कई अनिश्चितताएं उत्पन्न हुईं जैसे कि युद्ध सामग्री की आपूर्ति, स्पेयर पाट्र्स की आपूर्ति, संयुक्त राष्ट्र संघ के अंदर और बाहर कश्मीर और अन्य राजनैतिक मामलों में राजनयिक समर्थन और दक्षिण एशिया में अमेरिका का विरोध पक्ष। पिछले डेढ़ दशक में अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में बहुत महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। शीत युद्ध का अंत हो चुका है, विश्व एक ध्रुवीय बन गया है। कई राष्ट्र विघटित हो चुके हैं, शीत युद्ध सैन्य गुटों ने अपनी महत्ता खो दी है, इस प्रकार के कुछ गुट भंग हो चुके हैं, और नये क्षेत्रीय आर्थिक गुट बन रहे हैं। वैश्वीकरण ने नई समस्याओं को जन्म दिया है जैसे कि आतंकवाद, मुद्रा स्फीति, युद्ध शस्त्रों की संख्या में वृद्धि, ग्लोबल वार्मिंग आदि। ये सभी समस्याऐं किसी क्षेत्र विशेष की नहीं हैं बल्कि सभी देशों को किसी न किसी सीमा तक प्रभावित करती हैं। इसके कारण वे देश जो अभी तक समस्याओं को हल करने में सहयोग देने को तैयार नहीं थे और स्वभाव से एक ही प्रकृति के थे, वे भी सहयोग के लिए बाध्य हो गए। इस परिवर्तित अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में संयुक्त के लिए यह आवश्यक हो गया है कि वह इन चुनौतियों का

प्रभावकारी उत्तर देने के लिए स्वयं को परिवर्तित करें।

हमारी विदेश नीति के लिए कश्मीर में आतंकवाद सबसे बड़ी चुनौती है। पाकिस्तान और पश्चिमी देशों ने भारत पर मानवाधिकारों के हनन और आत्म निर्णय के अधिकारों की अनदेखी करने का आरोप लगाया है। परंतु धीरे-धीरे भारत इस स्थिति को नियंत्रण में ला रहा है।

कश्मीर विवाद के कारण भारत-पाक संबंध तेजी से बिगड़े हैं। भारत ने पाकिस्तान को सीमापार आतंकवाद और देश के अन्य भागों में आतंकवाद फैलाने का जिम्मेदार ठहराया है। 1998 में भारत ने परमाणु परीक्षण किए और उसके बाद पाकिस्तान ने भी ऐसे परीक्षण किए। पाकिस्तान ने संदेहास्पद रूप से कारगिल में अपने सैनिकों को भेजकर कश्मीर घाटी को भारत से अलग करने का एक और अनिष्ट कार्य किया। भारत ने इस चुनौती का दृढ़तापूर्वक सामना किया। अब पाकिस्तान को सकारात्मक और सारगर्भित वार्ता द्वारा समझाना भारत की विदेश नीति के लिए एक अहम चुनौती है, क्योंकि इसके पीछे उसे अमरीका की शह प्राप्त है।

कश्मीर के अतिरिक्त अन्य हिस्सों में भी आतंकवाद को रोकना भी हमारी विदेश नीति के लिए एक अवसर और चुनौती है। भारत की अधिकाधिक देशों के साथ आतंकवाद विरोधी संबंध बनाने में गहरी रुचि है।

शीत युद्ध के अंत के बाद पुराने मित्रों को कायम रखना और नए मित्र तलाशना भी हमारी विदेश नीति के लिए एक अन्य चुनौती है। उदाहरणार्थ, अरब देशों के साथ संबंधों को खराब किए बिना ही भारत इजरायल से अपने संबंध मजबूत बनाने का इच्छुक है। इसी प्रकार भारत की विदेश नीति का एक कार्य अमेरिका के साथ आर्थिक और सुरक्षा सहयोग को मजबूत बनाना है, परंतु इसके साथ ही वह ईराक और यूगोस्लाविया के विरुद्ध एक पक्षीय कार्रवाई के विरुद्ध है। अंत में, भारत अपनी विदेश नीति में आर्थिक पक्ष के महत्व को महसूस कर रहा है। इसलिए यह अपने पड़ोसी देशों-चीन और दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों के साथ संबंधों का एक नया आधार देने के लिए प्रयासरत है।

पाठगत प्रश्न 26.2

सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाएं :

(क) शीतयुद्ध के बाद के समय में अंतर्राष्ट्रीय संबंध द्विध्रुवीय प्रारूप पर आधारित हैं। (सत्य/असत्य)

(ख) कश्मीर मसला भारत की विदेश नीति के लिए 1990 में सबसे बड़ी समस्या बन गया। (सत्य/असत्य)

(ग) शीतयुद्ध के बाद भारत की विदेश नीति अरब देशों को नकारना और इस्राइल को स्वीकारना चाहती है। (सत्य/असत्य)

(घ) भारत आतंक विरोधी देशों का एक गुट बनाने के लिए प्रयासरत है। (सत्य/असत्य)

26.3 भारत और संयुक्त राष्ट्र

26.3.1 संयुक्त राष्ट्र के शांति और निःशस्त्रीकरण प्रयासों में भारत का योगदान

संयुक्त राष्ट्र जिसकी स्थापना 24 अक्टूबर 1945 को हुई, द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संगठन है। इसके कार्यकलापों का औपचारिक आधार संयुक्त राष्ट्र चार्टर है। विश्व के मामलों में संयुक्त राष्ट्र की महत्वपूर्ण भूमिका है। 50 से भी अधिक वर्षों से संयुक्त राष्ट्र राज्यों के बीच संबंधों

को बनाने और अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों को नियंत्रित करने में सहायता कर रहा है। संयुक्त राष्ट्र ने नागरिकों की सुरक्षा, शांति और विकास को बढ़ावा देने में योगदान दिया है। नि:शस्त्रीकरण के द्वारा संयुक्त राष्ट्र ने विश्व शांति की दिशा में भी योगदान दिया है। भारत ने भी संयुक्त राष्ट्र के नि:शस्त्रीकरण प्रयास में बहुत अधिक योगदान दिया है।

नि:शस्त्रीकरण खतरनाक हथियारों (जैसे परमाणु अस्त्रों) पर अंकुश लगाना, उनमें कमी करना तथा यथा सम्भव विनाश करना है। भारत ने आजादी के बाद से ही विश्व नि:शस्त्रीकरण के उद्देश्य को पाने के लिए भेदभाव रहित प्रयास किए हैं। परमाणु हथियारों की विनाशकारी क्षमता के चलते भारत ने सदैव ही यह विश्वास व्यक्त किया है कि परमाणु हथियारों से मुक्त विश्व की भूमण्डलीय सुरक्षा बढ़ेगी। इस प्रकार भारत ने सदैव ही परमाणु के विनाश और नि:शस्त्रीकरण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है तथा उसे संपूर्ण नि:शस्त्रीकरण की ओर पहला कदम माना है।

भारत ने संयुक्त राष्ट्र के नि:शस्त्रीकरण प्रयास में विचारों, संकल्पबद्धता, पहल करने और भेदभाव को समाप्त करने के पक्ष में बहुत योगदान दिया है। 1948 में भारत ने परमाणु हथियारों को राष्ट्रीय शस्त्र भंडार में कटौती करने और परमाणु ऊर्जा को शांति कार्यों में प्रयोग करने का प्रस्ताव रखा। 1950 में भारत ने संयुक्त राष्ट्र शांति कोष बनाने का भी प्रस्ताव रखा जिसके धन को विनाशकारी हथियारों को कम करने और विकास कार्यों के लिए प्रयोग किया जाना था। 1954 में भारत ने व्यापक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध की वकालत की। 1963 में आंशिक परीक्षण प्रतिबंध समझौते का पहला सदस्य भारत ही था। 1964 में संयुक्त राष्ट्र एजेंडा के आधार पर हथियारों के उत्पादन पर प्रतिबंध की पहल भी भारत ने की। परंतु कुछ देशों द्वारा इस समझौते के अनुसार कुछ परमाणु हथियारों पर दृढ़तापूर्वक प्रतिबंध न लगा पाने से इसके उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो सकी। यद्यपि हमारे देश ने तथाकथित रूप से इस समस्या का विरोध किया।

1984 में भारत ने अर्जेंटिना, यूनान, मैक्सिको, स्वीडन और तंजानिया के साथ मिलकर 'छह राष्ट्र पाँच महाद्वीप' शांति उपक्रम का आरम्भ किया। चार वर्ष बाद, सोवियत संघ के राष्ट्रपति गोर्बाचोब की भारत यात्रा के दौरान एक संयुक्त घोषणा के तहत राजीव गांधी ने परमाणु हथियारों के विनाश के लिए अपील की। दिल्ली घोषणा में परमाणु हथियारों से मुक्त विश्व बनाने के दस सिद्धांत बनाए। 1988 में राजीव गांधी ने एक कार्ययोजना का प्रस्ताव रखा जिसका उद्देश्य विश्व को परमाणु हथियारों से मुक्त और अहिंसात्मक बनाना था। इस प्रस्ताव के तहत सभी राष्ट्रों को 2010 तक विभिन्न चरणों में परमाणु हथियारों को नष्ट करने के लिए वचनबद्ध होना था। भारत जैविक हथियारों के सम्मेलन में हस्ताक्षर करने वाला मूल सदस्य था और 14 जनवरी 1993 को इस पर हस्ताक्षर एवं पुष्टि करने वाले 65 देशों में पहला देश था। 1993 में भारत ने परमाणु नि:शस्त्रीकरण की दिशा में अमेरिका के साथ ही संकल्पबद्धता को समर्थन दिया। जब व्यापक परीक्षण प्रतिबंध समझौता बिना सर्वसम्मति के असफल हो गया तो भारत इससे बहुत आहत हुआ और यह भारत के सुरक्षा प्रयासों को संबोधित करने में असफल रहा। इस प्रकार भारत दृढ़तापूर्वक अपने निश्चय पर अडिग रहा। 1998 में भारत द्वारा किए गए परमाणु परीक्षणों को व्यापक परीक्षण प्रतिबंध संधि के न्यायविहीन ढांचे से जोड़ा जा सकता है, यद्यपि कुछ राष्ट्रों ने प्रारम्भ में इसे नि:शस्त्रीकरण के विपरीत माना। भारत ने बिना भेदभाव के परमाणु नि:शस्त्रीकरण के लिए संकल्प दोहराया।

पाठगत प्रश्न 26.3

1. भारत सदैव समर्थन करता है :

(क) परमाणु हथियार रहित संसार का।

(ख) एक ऐसा विश्व जहां प्रत्येक राष्ट्र के पास परमाणु अस्त्र हो।

(ग) एक ऐसा विश्व जहां केवल कुछ गिने-चुने राष्ट्रों के पास ही परमाणु अस्त्र हों।

2. निम्न संक्षिप्त शब्दों का विस्तृत रूप लिखिए:

(क) सीटीबीटी (क) एनपीटी

26.3.2 संयुक्त राष्ट्र संघ के शांति प्रयास में भारत का योगदान

संयुक्त राष्ट्र संघ के शांति प्रयास में भारत के योगदान का इतिहास बहुत लंबा है। कई राजनैतिक प्रेक्षकों ने भारत के इस योगदान की सराहना की है। अंतर्राष्ट्रीय समुदायों के सदस्यों द्वारा भारत के इस योगदान को स्वीकार किया गया है। शांति कायम करने का अर्थ है बहुराष्ट्रीय सैनिकों, पुलिस और आम जनता की शक्ति द्वारा तथा संयुक्त राष्ट की सलाह से किसी भी देश के आंतरिक अथवा अन्य देशों के साथ संघर्ष को रोकना, कम करना तथा समाप्त करना होता है। शांति कायम करने वाले देशों की भूमिका संघर्ष और विवाद की स्थिति के अनुरूप बदल जाती है। शांति कायम रखने वाले इन राष्ट्रों का कार्यक्षेत्र एक विरोधी स्थिति के कारण बदल गया।

भारत ने संयुक्त राष्ट्र द्वारा चार महाद्वीपों में चलायी जा रही शांति निर्माण की 35 गतिविधियों में भाग लिया है।

इसका सबसे महत्वपूर्ण योगदान अफ्रीका और एशिया में शांति और स्थिरता लाने में है। वर्तमान में भारत संयुक्त राष्ट्र को सबसे अधिक सैन्य शक्ति का योगदान देने वाला देश है।

संयुक्त राष्ट्र में भारत के योगदान की भूमिका 1956 में तब प्रारम्भ हुई, जब इस्राइल ने मिस्र के साथ युद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र आपातकालीन बल (यूएनईएफ) की गाजा पट्टी और सिनाय में स्थापना हुई। अफ्रीका में कांगो को भारतीय सैनिकों की उपस्थिति का लाभ हुआ। 1960 के दशक में एकता और अखण्डता कायम रखने में भारत बहुत सहायक रहा।

शीत युद्ध के बाद भी संयुक्त राष्ट्र में भारत का योगदान उतना ही महत्वपूर्ण है, और सैनिक अधिकारी संयुक्त राष्ट्र के महासचिव के निवेदन पर अंगोला, कम्बोडिया, सोमालिया, अल सैल्वाडोर और सियरानियोन आदि में भेजे गए हैं। अनेक देश गृह युद्धों के कारण उत्पन्न अव्यवस्था के शिकार थे। भारत ने न केवल सेना ही भेजी बल्कि पुलिस, डॉक्टर, इंजीनियर और प्रशासक भी भेजे।

पाठगत प्रश्न 26.4

1. भारतीय सैनिकों के साथ प्रथम शांति सेना भेजी गई थी–

(क) कोरिया में

(ख) सिनाय में

(ग) कांगो में

2. कौन सा कथन असत्य है?

(क) संयुक्त राष्ट्र संघ के शांति प्रयास में भारत सैन्य शक्ति प्रदान करने वाला दूसरा सबसे बड़ा देश है।

(ख) शांति कायम करना केवल शीत युद्ध के काल तक ही सीमित था।

(ग) कांगो को विघटन से बचाने में भारत की भूमिका महत्वपूर्ण थी।

3. शांति कायम रखने में भारत द्वारा किए गए योगदान में शामिल हैं–

(क) केवल सैनिक

(ख) केवल असैनिक कर्मचारी

(ग) सैनिक और असैनिक कर्मचारी

26.4 सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता का मामला

जैसा कि आप जानते हैं कि विश्वशांति कायम करने की क्षमता सुरक्षा परिषद के प्रभाव पर निर्भर करती है, परंतु यह सुरक्षा परिषद अपने रूढ़िवादी और पुराने सदस्यों के कारण कष्ट में रही है। वर्तमान में सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्य अमेरिका, रूस, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस और चीन हैं। परंतु सुरक्षा परिषद के इस गठन का वर्तमान विश्व की शक्ति संरचना से कोई तालमेल नहीं है, क्योंकि आज विश्व 1945 की तुलना में बिल्कुल बदल चुके है। भारत सबसे बड़ी चौथी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है और अंतर्राष्ट्रीय सभाओं में इसका नेतृत्व, विश्व में संयुक्त राष्ट्र द्वारा शांति बनाने के प्रयास में इसके योगदान और तृतीय विश्व के लिए इसके योगदान को देखते हुए सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता का यह एक प्रबल दावेदार है और कई मित्र राष्ट्र इसे अपना समर्थन भी दे रहे हैं। इस मामले की जटिलता के कारण इस पर अंतिम निर्णय लेने में कुछ और समय लगेगा।

पाठगत प्रश्न 26.5

1. सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य नहीं है :-

(क) रूस

(ख) ग्रेट ब्रिटेन

(ग) भारत

(घ) चीन

2. कौन-सा कथन असत्य है -

(क) शीत युद्ध का अंत हो चुका है।

(ख) सोवियत संघ विघटित हो चुका है।

(ग) वैश्वीकरण एक सत्यता है।

(घ) संयुक्त राष्ट्र का विघटन हो चुका है।

आपने क्या सीखा

भारत ने अपनी विदेश नीति के कुछ आधारभूत सिद्धांत बनाए हैं जिनसे यह बहुत अधिक विचलित नहीं

हुआ है। वास्तव में गुट निरपेक्षता जैसे इसके कुछ लक्षण अभी तक सार्थक और महत्वपूर्ण हैं। कुछ दशक पुराने इन सिद्धांतों के टिकाऊपन का प्रमाण यह है कि पचास वर्ष पुराने पंचशील को द्विपक्षीय संबंधों का आधार बनाकर भारत और चीन ने इसे पुनर्जीवित किया है। संयुक्त राष्ट्र के शांति कायम रखने के प्रयास और नि:शस्त्रीकरण में भारत ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आने वाले कुछ वर्षों में भारत एक आर्थिक महाशक्ति बन जाएगा और भविष्य में भी यह राजनैतिक, कूटनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में राष्ट्रीय हितों के लिए आवश्यक कदम उठाएगा।

पाठांत प्रश्न

1. भारत की विदेश नीति के मूल सिद्धांतों का उल्लेख कीजिये।
2. गुटनिरपेक्ष नीति की सार्थकता का वर्णन कीजिए।
3. सुरक्षा परिषद् में भारत की स्थायी सदस्यता कहाँ तक उचित है?
4. शीत युद्ध के अंत के बाद और सोवियत संघ के विघटन के बाद भारत के सामने कौन सी चुनौतियां आई हैं?
5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए:

   (क) पंचशील

   (ख) संयुक्त राष्ट्र संघ के नि:शस्त्रीकरण प्रयास में भारत का योगदान

   (ग) संयुक्त राष्ट्र संघ के शांति प्रयास में भारत का योगदान।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

26.1

1. (क) नेहरू

   (ख) बैन्डंग

   (ग) बेलग्रेड, 1961

   (घ) भारत,चीन

   (ङ) नई दिल्ली

2. (क) असत्य

   (ख) सत्य

   (ग) सत्य

टिप्पणी

26.2

1. (क) असत्य

   (ख) सत्य

   (ग) असत्य

   (घ) सत्य

26.3

1. (क) परमाणु हथियारों - रहित संसार का
2. (ख) कॉम्प्रिहैंसिव टैस्ट बैन ट्रीटी

   (ग) न्यूक्लियर नॉन-प्रोलीफरेशन ट्रीटी

26.4

1. (ख)
2. (ग)
3. (ग)

26.5

1. (ग)
2. (ग)

पाठांत प्रश्नों के लिए संकेत

1. खण्ड 26.1 देखें
2. खण्ड 26.1.2 देखें
3. खण्ड 26.4 देखें
4. खण्ड 26.2 देखें
5. (a) खण्ड 26.1.1 देखें

   (b) खण्ड 26.3.1 देखें

   (c) खण्ड 26.3.2 देखें